नवम्बर 2016

वर्ष 29 चतुर्थ अंक

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 पूर्ण स्वीकृति का अभाव क्यों ?

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
16 आर्थिक परिदृश्य
20 राष्ट्रीय परिदृश्य
25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
30 क्रीड़ा जगत्
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 युवा प्रतिभाएं
38 विज्ञान समाचार
40 सारभूत तत्व कोष

लेख

44 उद्यमिता-प्रोत्साहन लेख—स्टार्ट अप : उद्यम-शीलता को बढ़ावा देने का उपाय
45 संवैधानिक लेख—भारत में न्याय व्यवस्था : एक चुनौती
47 कैरियर लेख—एस.एस.बी.
53 सामान्य जानकारी —उड़न राख की उपयोगिता के बारे में जानिए
55 राजस्थान वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान
56 बिहार वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

हल प्रश्न-पत्र

57 आगामी आई.बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक पी.ओ. परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
67 आगामी उत्तर प्रदेश पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
80 रेलवे रिक्रूटमेण्ट बोर्ड (गैर-तकनीकी श्रेणी) परीक्षा, 2016
88 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी लेवल (10+2) परीक्षा, 2015
102 रेलवे डिपार्टमेंटल जीडीसीई/एएसएम परीक्षा, 2016

एस.बी.आई. लिपिकीय संवर्ग (प्रारम्भिक) परीक्षा, 2016

109 तर्कशक्ति परीक्षा
112 गणितीय अभियोग्यता
116 English Language
119 राजस्थान उच्च न्यायालय क्लर्क परीक्षा, 2016

सामान्य

127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
128 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. —सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

पूर्ण स्वीकृति और प्रेम का अभाव ही भय का कारण हैं. भय इसलिए है कि व्यक्ति का सत्य की सार्वभौमिकता में विश्वास नहीं है. केवल सत्य की स्वीकार्यता को समझने मात्र से भय की गम्भीरता क्षीण होती जाती है.

हम सभी इंसानों में पूर्ण स्वीकृति का अभाव रहता है और शायद यही हमारे भीतर रहे भय का एक प्रमुख कारण है. हम जन्म और जीवन को स्वीकारते हैं, किन्तु मृत्यु को नहीं. घर में बच्चे का जन्म हो यह हमें स्वीकार है किन्तु बच्चा मर जाए तो स्वीकार नहीं. यही कारण है कि मौत से हमें डर लगता है. सूर्योदय हो यह स्वीकार है, प्रकाश के लिए हमारी स्वीकृति है, किन्तु अंधकार के लिए नहीं. यही कारण है कि अंधेरे से हमें डर लगता है, उजाले से नहीं.

मित्र का मिलना स्वीकार है, बिछुड़ना नहीं तब ही वियोग खौफजनक लगता है. कोई हमें प्यार करे, हमें याद किया करे, यह हमें स्वीकार है, किन्तु कोई हमें भुला दे, यह हमें स्वीकार नहीं इसी कारण हमारे प्रिय लोगों से भी हमें भय लगता है कि कहीं ये हमारा साथ छोड़ तो नहीं देंगे. किसी दिन हमारी उपेक्षा तो न करेंगे ?

इसी प्रकार जीत हमें स्वीकार है, हार हमें मंजूर नहीं तो हार हमें डराती है. कहीं असफल न हो जाऊँ, यह बात दिल को कचोटती रहती है.

व्यापार में लाभ स्वीकार है, हानि नहीं, हानि की कल्पना भी हमें डराती है. हमारे भीतर मौजूद हर प्रकार के डर के पीछे कोई न कोई 'अस्वीकृति का भाव', 'तथ्य प्रति अज्ञान का भाव' छुपा हुआ है. जब तक हम इस तथ्य को स्वीकार नहीं कर लेंगे तब तक हमारे प्राण कंपते रहेंगे. हमारे भीतर दुष्ट कल्पनाएँ चालू रहेंगी. हम सदा तराजू के एक पलड़े को पकड़ना चाहेंगे और इसके दूसरे पहलू से बचने की कोशिश करेंगे, जोकि लगभग असंभव ही है. किसी भी सिक्के के एक पहलू को पकड़ने की इच्छा रखने वाला व्यक्ति दूसरे पहलू को चाहे अथवा न चाहे वह तो उसके साथ जुड़ ही जाता है. इस सृष्टि का यह ध्रुव सत्य है कि हर चीज अपने दो विरोधी ध्रुवों के साथ अस्तित्व में रहती है. जिसे श्री विराट गुरुजी इस प्रकार कहते हैं कि–

सूरज राशि दिव निशि कहती है,
कहाँ उदय है अस्त नहीं.
जहाँ जन्म है वहीं मरण भी,
बनना है तो ध्वस्त वहीं.
लेकिन आगमवाणी कहती–
मृत्यु से घबराएँ क्यूँ ?
फिर न जन्म लें धारें दुश्मन,
भवगति से भरमाएँ क्यूँ.

●●●